तरुपुत्र

पेड़-पौधों को पुत्रवत् पालने का महत्व

दो शब्द

पर्यावरण और अध्यात्म दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है। ऋषिगणों के समय में यह सम्बन्ध अविच्छिन्न बना रहा इसी कारण कभी भी दैवी आपदाएं–प्राकृतिक विभीषिकाओं की बहुलता नहीं रही। हमारे ऋषिगण विश्वराष्ट्र की बात कहते थे एवं उसे पुष्ट बनाने का निर्देश देते थे। **"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"** के रूप में इकालाजी का एक अतिमहत्वपूर्ण सूत्र हमें ऋषिगणों ने दिया। आज चारों ओर वृक्षों का विनाश हो रहा है, इसी कारण सभी प्रकार की विपत्तियां हम पर बरस रही हैं। भूमि का कटाव, उपजाऊ मिट्टी का क्षरण होकर उसका समुद्र में बहकर चले जाना एवं क्रमशः कवच हटते चले जाने से पृथ्वी का तापमान बढ़ना इसी कारण हैं।

जब तक हम पर्यावरण के प्रति आध्यात्मिक दृष्टि विकसित नहीं करेंगे, समस्या का समाधान मिलने वाला है नहीं। भोगवादी–वैश्वीकृत इस युग में यह दृष्टि अपनाना अनिवार्य है यदि हम संसाधनों से भरी इस धरती पर सुख से रहना चाहते हैं तो भी। शान्ति के लिए तो वृक्षों का होना और भी जरूरी है। सभी धर्म सम्प्रदाय इस संबंध में एक ही शिक्षण देते आए हैं। सर्वधर्मसमभाव की धुरी पर्यावरण बन सकती है एवं इससे मानव मात्र का कल्याण हो सकता है, यह प्रतिपादन किया है श्री राधाकृष्ण दुबे जी ने। बड़ा ही मार्मिक चिन्तन कर–गहन विवेचन कर इनने जो सूत्र निकाले हैं, वे बड़े ही उपयोगी हैं। वृक्षों को पुत्र रूप में अपनाने–पालने पोसने की बात को उनने जिस नजरिए से प्रस्तुत किया है–वह अभूतपूर्व है। मेरी शुभकामनाएँ हैं कि उनका यह अभियान गति पकड़े एवं जन–जन तक पहुँचे। तब ही हम पर्यावरण की रक्षा कर पायेंगे और ऋषिकालीन सतयुग देख सकेंगे।

(डॉ. प्रणव पण्ड्या)
गायत्रीतीर्थ–शान्तिकुञ्ज,
हरिद्वार

तरुपुत्र

तरुपुत्र अर्थात् पुत्र के रूप मे अपनाया गया तरु। जो वृक्ष रोपणकर्ता को नरक से पार करे उसे तरु कहते है और जो सन्तान माता–पिता की नरक से रक्षा करें उसे पुत्र कहते है। अनेक वृक्ष ऐसे हैं जो छोटे–बड़े लाखों जीवों को भोजन, छाया, शरण और सन्तुलित पर्यावरण देकर प्रतिदिन बहुत बड़ा पुण्य करते है। ऋषियों के अनुसार यह पुण्य उस वृक्ष का रोपण, रक्षा व सेवा करने वाले को मिलता है। व्यक्ति की अपनी सन्तान विरले ही उतना पुण्य कर पाती है जितना एक वृक्ष अपने जीवन काल में करता है। शास्त्रीय मान्यता यह भी है कि पाप करने वाली सन्तान के पापों से पितर घोर नरक में जाने को बाध्य होते है, इसलिए ऋषियों ने नरक से मुक्ति दिलाने के लिए वृक्ष को पुत्र के रूप में ग्रहण करने की विधा प्रतिपादित की। इस पुस्तिका में वृक्ष को पुत्र रूप में ग्रहण करने की की प्राचीन परम्परा को प्रस्तुत कर लोगों में वृक्षों के प्रति सेवा संवेदना का भाव जाग्रत करने का प्रयास किया गया है।

शुभ–कामना

सद्बुद्धि (गायत्री) की उपासना और परोपकार(यज्ञ)मय जीवन को क्रमशः देव संस्कृति की मां और पिता कहा गया है। परोपकार में सर्वस्व अर्पित करते रहना भारतीय जीवन का आदर्श रहा है। देव सस्कृति में परोपकार भाव की जड़ें इतनी गहरी रही हैं कि व्यक्ति कामना करता है कि मरने के बाद उसका शव भी यज्ञ की आहुति के रूप में अर्पित हो और उसकी कृतियाँ (सन्तान, शिष्य, संस्था, ग्रन्थ, सड़क, जलाशय, बाग–बगीचे आदि) भी परोपकार में निरत रहें। इस क्रम में उसकी सबसे बड़ी अपेक्षा जीवन की सबसे बड़ी कृति से होती है, इसीलिए वह पुत्र को परोपकार मय जीवन जीने के लिए संस्कार और साधन उपलब्ध कराता है। इतने प्रयासों के बाद भी यदि पुत्र यज्ञमय जीवन नहीं जी पाता तो पिता की आत्मा को पीड़ा होती है जो उसकी सद्गति में बाधक होती है। इसीलिए ऋषियों ने पौध को पुत्र रूप में धारण कर पाल–पोस, सेवा कर बड़ा बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया, क्योंकि वृक्ष सदैव ही परोपकारी बने रहते हैं।

प्रस्तुत कृति लोगों में देव संस्कृति का रस प्रवाहित करने में सफल होगी ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। इस अभियान की सफलता के लिए श्री राधाकृष्ण जी दुबे का यह एक सराहनीय प्रयास है। इनके द्वारा पूर्व प्रकाशित पुस्तकों के क्रम में यह नया प्रकाशन समाज को एक नई दिशा देगा यह भी विश्वास है।

(डॉ. एस.पी. मिश्रा)
कुलपति
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
गायत्रीकुञ्ज,
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

विषय सूची

1.	तरुपुत्र	5
2.	तरु अर्थात् तारने वाला	7
3.	पुत्र अर्थात् नरक से रक्षा करने वाला	9
4.	स्वर्ग और नरक	11
5.	विभिन्न धर्म ग्रन्थों में तरुपुत्र	13
	(1) पद्म पुराण में	13
	(2) नन्दि पुराण में	14
	(3) मत्स्य पुराण में	15
	(4) विष्णु स्मृति में	15
	(5) ब्रह्मवैवर्त पुरण में	16
	(6) अग्नि पुराण में	17
	(7) महाभारत में	18
	(8) वाराह पुराण में	19
6.	तरुपुत्र धारण विधि	20
7.	तरुपुत्र के प्रति संवेदनशीलता	25
8.	आज भी	26
9.	देख खुला है द्वार पुजारी!	28

वे हमारा कल्याण करें !

अश्वत्थो वटवृक्षचन्दनतरुर्मन्दार – कल्पद्रुमौ।
जम्बू–निम्ब–कदम्ब–चूत – सरला वृक्षाश्च ये क्षीरिणः।।

सर्वे ते फलमिश्रिताः प्रतिदिनं विभ्राजिता सर्वतो।
रम्यं चैत्ररथं सनन्दनवनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।।

पीपल, बरगद, चन्दन, मन्दार, कल्पवृक्ष, जामुन,
नीम कदम्ब, आम, चीड़ व सभी दूध वाले
वृक्ष जो फलों से संयुक्त होकर प्रतिदिन इन्द्र के (उपवनों)
चैत्ररथ व नन्दन वन की शोभा बढ़ाते हैं,
वे हमारा कल्याण करें।

(पाणिग्रहण संस्कार के समय किए जाने वाले
शाखोच्चार मन्त्रों में से एक मन्त्र)

तरुपुत्र

सभी धर्मों में एक सामान्य सिद्धान्त यह है कि परोपकार से सुख–शान्ति व स्वर्ग मिलता है तथा पर–पीड़न से दुःख, अशान्ति व नरक मिलता है। दीन–दुःखियों की सेवा के साथ–साथ भारतीय संस्कृति में प्रकृति के निरीह जीवों व सूक्ष्म में निवास करने वाली शक्तियों जैसे यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, पितर, नाग व देवात्माओं की सेवा करने का महत्व प्रतिपादित किया गया है। धार्मिक भावना से चीटियों को आटा–गुड़, मछलियों को आटा–लाई, चिड़ियों को दाना, बन्दरों को चना, गाय व कुत्ते को भोजन, दैवीशक्तिसम्पन्न वृक्ष वनस्पतियों को जल देते लोगों को हम आये दिन देखते रहते है। दैनिक उपार्जन से व्यक्ति बहुत सीमित परोपकार कर पाता है।

अब एक दूसरी बात पर ध्यान दें। अपने आस–पास या वीरान में स्थित किसी विशालकाय बरगद, पीपल, गूलर, पाकड़ आदि के एक वृक्ष से प्रति दिन भोजन, छाया, आश्रय व सुरक्षा पाने वालों की संख्या की कल्पना करें। स्थूल अनुमान में भी यह संख्या हजारों लाखों के लगभग होगी किन्तु एक सूक्ष्म जीव विज्ञानी की दृष्टि में यह संख्या करोड़ों अरबों तक चली जाएगी। अध्यात्मज्ञानी इन पर असंख्य अदृश्य आत्माओं के आश्रय लेने की बात कहते हैं। पुराणकार तो यहां तक कहते हैं कि इस वृक्ष के पुष्पों से देवताओं को सेवा मिलती है, वर्षा होने पर इस वृक्ष से गिरने वाले जल से पितरों को तृप्ति मिलती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक वृक्ष द्वारा किये जाने वाले परोपकार का हजारवां हिस्सा भी मनुष्य अपने दैनिक उपार्जन से नहीं कर पाता। अतः शास्त्रों में इन परोपकारी वृक्षों को रोपित करने, पाल–पोस–रक्षा कर बड़ा करने, जल देने व सुरक्षा करने को असीम पुण्यदायी कृत्य बताया गया है। यह वृक्ष जिस किसी भी व्यक्ति के सहयोग से आज इस योग्य है कि इतना बड़ा परोपकार कर पा रहा है उन सभी को इस परोपकार के पुण्य का एक हिस्सा मिलता है। इसीलिए भारतीय धर्म ग्रन्थों में वृक्षों को

पुत्र रूप में अपनाने का विधान बताया गया है जिसमें वृक्ष को पुत्र की तरह रोपित करने, पाल–पोस–सेवा कर बड़ा बनाने का दायित्व निभाना होता है। इस वृक्ष (तरु) को रोपणकर्ता का पुत्र कहा जाता है और कहा गया है कि इस तरुपुत्र का पिता परम सद्गति, परम स्वर्ग व सुख को प्राप्त करता है।

वास्तव में परोपकारी वृक्षों के रोपण, सेवा, रक्षा में जो कोई भी व्यक्ति जिस किसी भी तरह से सहयोग करता है उसे इस वृक्ष से भोजन, छाया, आश्रम रक्षा पाने वाले प्राणियों व आत्माओं का आशीर्वाद व पर्यावरण सेवा के पुण्य का फल मिलता है और यह पुण्य तब तक सतत् मिलता रहता है जब तक वृक्ष अस्तित्व में रहता है।

इन परोपकारी वृक्षों के विनाश का कारक बनने वाले, वृक्षों के पातन में किसी भी प्रकार सहयोग देने वालों को भी सावधान हो जाना चाहिए। इस वृक्ष की हत्या से जिन लाखों दृश्य अदृश्य प्राणियों और आत्माओं का भोजन, पानी, छाया, सुरक्षा, आश्रय छिन जाता है, उनकी आह क्या उनको कभी सुख से बैठने देगी? शायद नहीं !

सदक़ा ए जारिया

बुखारी शरीफ़ की एक हदीस के अनुसार मुहम्मद साहब ने मुसलमानों से कहा कि –

"तुम लोग ज़्यादा से ज़्यादा वृक्ष लगाओ और जब इनसे मनुष्य फल खायेंगे या जानवर चारा चरेंगें तो तुमको इसका उतना ही पुण्य मिलेगा जैसे तुमको फल या चारा खिलाकर मिलता है।"

जरा सोचने की बात है कि इस्लाम में पौधे का लगाना ऐसा भला काम है जिसका पुण्य जीवन पर्यन्त एवं मृत्योपरान्त उस व्यक्ति को मिलता रहेगा, जिसने पौधा लगाया है और उससे मानव समाज या जानवरों को लाभ मिल रहा हो। इस्लामी परम्परा में इस तरह के कार्यों को 'सदक़ा–ए–जारिया' कहते हैं जिसका तात्पर्य है जारी रहने वाला या अविरल दान।

– डॉ एम.आई.एच. फारूकी

तरु अर्थात् तारने वाला

सामान्यरूप में तरु को वृक्ष के पर्यायवाची के रूप में लिया जाता है, किन्तु तरु का शाब्दिक अर्थ है तारने वाला। वृक्ष अपने रोपण कर्ता को नरक से तारते हैं, रक्षा करते हैं इसलिए उन्हें तरु कहा गया। 'तरु' शब्द की व्याख्या विभिन्न ग्रन्थकारों ने निम्न प्रकार से की है।

वाचस्पत्यम्–ग्रन्थ में तरु शब्द की व्याख्या निम्नानुसार दी गयी है।

तरु (पु.) **तरन्त्यनेन नरकमारोपका** : तॄ – उन्
रोपणकर्ता को नरक से तारते हैं

1. वृक्ष
2. तारक–जैसे विष्णु के लिए विष्णु सहस्त्रनाम में **'भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः'** व भागवत में **'भूर्भुवः स्वस्तरुः लोकत्रयतारकः'**।

'अमरकोश की रामाश्रमी टीका में तरु की व्याख्या निम्नानुसार है

तरु : तरति। तरन्त्यनेन इति वा।
'तॄ प्लवनसंतरणयोः'

शब्दकल्पद्रुम में तरु की व्याख्या निम्नानुसार है।

तरु : तरति समुद्रादिकमनेनेति।
समुद्र आदि नरक कुण्डों से पार करते हैं।
तॄ + "भृमृशीतृचरीति" (उणादि, 1, 7)

मनुष्य की कोई भी कृति जिससे संसार का कल्याण होता रहता है के बदले में उसे पुण्य मिलता रहता है। भारतीय संस्कृति में कुँआ और जलाशय खुदवाने, विद्यालय, धर्मशाला ओर मन्दिर बनवाने, वृक्षारोपण करने आदि को बहुत बड़े पुण्य का कार्य कहा गया है क्योंकि ये सब व्यक्ति के मरने के बाद भी संसार का कल्याण करते रहते हैं। जिससे

परलोकगत आत्मा को इसका पुण्य मिलता रहता है और उसे शान्ति मिलती है। इन सब में वृक्षों के परोपकार की महिमा सर्वोपरि है क्योंकि इनसे समूची सृष्टि को सतत सेवा मिलती रहती है। यह सेवा इतनी अधिक पुण्यदायक होती है कि व्यक्ति को अशान्तिसागर (नरक) में डूबने से बचाती है। इसी लिए वृक्षों को तरु अर्थात– रोपणकर्ता को तारने वाला कहा गया है। इस नामकरण से हमारे ऋषियों ने सिद्ध करने का प्रयास किया है कि वृक्ष व्यक्ति को सद्गति दिलाने में पुत्र और भगवान की तरह ही हैं।

परोपकारी तरु

भगवान कृष्ण ने ग्वालबालों को सम्बोधित करके कहा –

पश्येतान् महाभागन् परार्थैकान्तजीवितान्।
वातवर्षातपहिमान् सहन्तो वारयन्ति नः।।

अहो एषां वरं जन्म सर्वप्राण्युपजीवनम्।
सुजनस्येव येषां वै विमुखा यान्ति नार्थिनः।।

पत्रपुष्पफलच्छायामूलवल्कलदारूभिः।
गन्धनिर्यासभस्मास्थितोक्मैः कामान् वितन्वते।।

" मेरे प्यारे मित्रों ! देखो, ये वृक्ष कितने भाग्यवान हैं ! इनका सारा जीवन केवल दूसरों की भलाई करने के लिये ही है। ये स्वयं तो हवा के झोंके, वर्षा, धूप और पाला–सब कुछ सहते हैं, परन्तु हम लोगों की उनसे रक्षा करते हैं।। मैं कहता हूँ कि इन्हीं का जीवन सबसे श्रेष्ठ है। क्योंकि इनके द्वारा सब प्राणियों को सहारा मिलता है, उनका जीवन–निर्वाह होता है। जैसे किसी सज्जन पुरुष के घर से कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटता, वैसे ही इन वृक्षों से भी सभी को कुछ–न–कुछ मिल ही जाता है।। ये अपने पत्ते, फूल, फल, छाया, जड़, छाल, लकड़ी, गन्ध, गोंद, राख, कोयला, अंकुर और कोपलों से भी लोगों की कामना पूर्ण करते हैं।। "

– श्रीमद्भागवत् महापुराण दशमस्कन्ध, बीसवां अध्याय–32, 33, 34

पुत्र अर्थात् नरक से रक्षा करने वाला

पुत् नामक नरक से रक्षा करने वाला होने के कारण सत्कर्मी सन्तान को पुत्र कहा गया जैसा कि महाभारत में कहा गया है।

पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् पितरं त्रायते सुतः।
तस्मात् पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयम्भुवा।।

– महाभारत : 1.74.37

बेटा पितरों का पुत् नामक नरक से उद्धार करता है, इसीलिए स्वयं ब्रह्मा ने इन्हें पुत्र नाम से कहा है।

रामायण में भी यही भाव व्यक्त किया गया है।

पुन्नाम्नो नरकात् यस्मात् पितरं त्रायते सुतः।
तस्मात् पुत्र इति प्रोक्तः पितॄन् यः पाति सर्व्वतः।।

– रामायण : 2.107.12

बेटा पुत् नामक नरक से पिता का उद्धार करता है, इसलिए पुत्र कहा गया है। वही पुत्र है, जो पितरों की सब ओर से रक्षा करता है।

पुत् नाम के घोर नरक का वर्णन वामन पुराण के 58वें अध्याय में विस्तार से दिया गया है जिसमें सोलह प्रकार के पाप आते हैं, किन्तु सन्तान सत्कर्मों के बल पर ही अर्थात् सत्पुत्र होने पर ही पितरों को नरक से पार कर पाते हैं, जैसा कि अग्निपुराण में कहा गया है–

सत्पुत्रेण मुनिश्रेष्ठाः समुत्पन्नेन दुर्म्मतिः।
उत्तताराऩ्वियात् स्वर्गं पुन्नामनरकाद्द्रुतम्।।

– अग्निपुराण

हे मुनिश्रेष्ठ! बुरे व्यक्ति के भी सत्पुत्र उत्पन्न हो जाने से उसे पुत् नरक से रक्षा व स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

विष्णुपुराण में भी यही बात कही गयी है।

सत्पुत्रेण च जातेन वेनोऽपि त्रिदिवं ययौ।
पुन्नाम्नो नरकात् त्रातः सुतेन सुमहात्मना।।

– विष्णुपुराण : 1.13.42

अर्थात् केवल सत्पुत्र के ही जन्म लेने से वेन भी स्वर्ग को चला गया। इस प्रकार महात्मा पुत्र (राजा पृथु) के कारण ही उसकी पुत् नामक नरक से रक्षा हुई।

सन्तान के कुमार्गी होने पर पितर घोर नरक में पड़ते है जैसा कि पद्म पुराण में कहा गया है।

तथा यदि कुपुत्रः स्यात्तेन मज्जन्ति पूर्व्वजाः।
सुघोरे नरके दीनाः शपन्ति च मुहुर्मुहुः।।
यथा जलं कुप्लवेन तरन्मज्जति मूढ़धीः।
तथा पिता कुपुत्रेण तमस्यन्धे निमज्जति।।

– पद्म पुराण भूमि खण्ड

यदि कुपुत्र उत्पन्न हो जायें तो उससे पूर्वज नरक में वास करते हैं एवं उस नरक में रहते हुए बार–बार शाप देते हैं। जैसे खराब नाव से जल को पार करने में मूर्ख डूब जाते हैं, उसी तरह कुपुत्र होने से पिता गहरे अन्धकार में डूब जाते हैं।

इसी लिए ऋषियों ने आत्मोत्थान की दृष्टि या सद्गति प्राप्ति की दृष्टि से सन्तान की तुलना में वृक्ष को पुत्र रूप में स्वीकार करने की अभिशंसा का है। भारतीय संस्कृति में शिष्य को भी पुत्र का स्थान दिया गया है जैसे कि पाणिनी सूत्र से स्पष्ट है–

संख्या वंश्येन 2.1.19 **वंशो द्विधा–विद्यया जन्मना च।**

वृक्ष रक्षा = सृष्टि रक्षा

स्वर्ग और नरक

'भारतीय संस्कृति में स्वर्ग और नरक का विधान है। शुभ कार्यों से स्वर्ग और निंद्य कार्यों, दुराचरण, पाप आदि से नरक की कठोर यातनायें भुगतनी पड़ती हैं–हम यह मानते आये हैं। स्वर्ग को नाना नामों से पुकारा गया है। इसका एक नाम ब्रह्मलोक भी है। कहा गया है:–

तेषां मे वैष ब्रह्मलोको येषां,
तपो ब्रह्मचर्य येषु सत्यं प्रतिष्ठितम्।

जिनमें तप ब्रह्मचर्य है, सत्य प्रतिष्ठित है, उन्हें ब्रह्मलोक मिलता है।

जिनमें न तो कुटिलता है और न मिथ्या आचरण है और न कपट है, उन्हीं को विशुद्ध ब्रह्मलोक मिलता है।

जिस मानव में आशंका, दुःख, चिन्ता, भय, कष्ट, क्षोभ और निरुत्साह है, भोग–विलास और तृष्णा है, वही नरक है। जो धर्म–पालन, ईश्वर की सत्ता से विमुख है, नास्तिक है, वह नरक में जाते हैं, नष्ट हो जाते है। काम, क्रोध, लोभ और मोह ये चारो नरक के द्वार हैं। इनमें से किसी के भी वश में पड़ जाने पर नरक में पड़ा हुआ समझना चाहिए। अशुभ वासनाओं के भ्रम जाल में पड़कर मनुष्य दारुण नरक की यन्त्रणा में फँस सकता है। अन्य प्राणी तो क्षुधा और वासनाओं के जंजाल में बंधे हुए वासना–तृप्ति में ही जीवन नष्ट कर रहे हैं। वे नवीन कर्मों के द्वारा अपने को समुन्नत करने का प्रयत्न नहीं करते, पर मनुष्य कर्मयोनि में रहकर नये संस्कारों का उपार्जन करने वाला प्राणी है। उसके सामने दो मार्ग हैं, एक तो बन्धन या नरक का और दूसरा मोक्ष या स्वर्ग का। संसार के भोगों में फँसा हुआ मानव नरक में ही पड़ा हुआ है। इसके विपरीत सत्संग, परोपकार, शुभ कार्य, समाज–सेवा, आत्म सुधार द्वारा मनुष्य मोक्ष की ओर अग्रसर होता है।

जो व्यक्ति शास्त्र–निषिद्ध कर्मों, में पाप–प्रवृतियों में लगे रहते हैं, वे बार–बार आसुरी योनि को तथा अधम गति को प्राप्त होते हैं। विषयासक्ति

में पड़े हुए भोगों को लगातार भोगने वाले नरक में जाते हैं। सांसारिक भोग सुखों की प्राप्ति के साधन रूप सकाम–रूप से भिन्न यथार्थ कल्याण को न जानने वाले व्यक्ति पापों के परिणामस्वरूप हीन योनियों (कीट, पतंग, शूकर या वृक्ष, पत्थर इत्यादि) में जाते हैं।

पौराणिक मान्यता है यह है कि स्वर्ग और नरक दो भिन्न–भिन्न लोक हैं। दण्ड या पुरस्कार प्राप्ति के लिये मनुष्य वहां जाता है। वहां अपने पुण्य–पाप का पुरस्कार प्राप्त कर जीव पुनः इस लोक में आता है।

दूसरी मान्यता यह है कि स्वर्ग और नरक स्वयं मनुष्य में ही विद्यमान है। ये उसके मन के दो स्तर हैं। मनुष्य के मन में स्वर्ग की स्थिति वह है जिसमें देवत्व के सद्‌गुणों का पावन प्रकाश होता है। दया, प्रेम, करुणा, सहानुभूति, उदारता की धाराएं बहती हैं। इस स्थिति में मन स्वतः प्रसन्न रहता है। यही मानसिक मार्ग कल्याणकारी है। अतः इसे स्वर्ग की स्थिति भी कहा जा सकता है। दूसरी मनःस्थिति वह है जिसमें मनुष्य उद्वेग, चिंता, भय, तृष्णा, प्रतिशोध दम्भ आदि राक्षसी वृत्तियां मनुष्य को अन्धकूप में डाल देती हैं। अनुताप और क्लेश की काली और मनहूस मानसिक तस्वीरें चारों ओर दिखाई देती हैं। अन्तर्जगत यन्त्रणा से व्याकुल रहता है। कुछ भी अच्छा नहीं लगता। शोक, संताप और विलाप की प्रेतों जैसी आकृतियां अशान्त रखती हैं। यही नरक की मनःस्थिति है। इस प्रकार इस जगत् में रहते हुए मानव–जीवन में ही हमें स्वर्ग और नरक के सुख–दुःख प्राप्त हो जाते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार संभव है कि अपने पवित्र कर्मो द्वारा आपको इसी जगत् में मनःशान्ति, सुख, स्वास्थ्य, संतुलन, इत्यादि प्राप्त हो जाए या अपने कुकृत्यों द्वारा अशांति द्वेष, वैर, तृष्णा, लोभ आदि का नरक मिले।'

– श्रीराम शर्मा आचार्य

वृक्ष पूजा = सृष्टि पूजा

धर्म ग्रन्थों में तरुपुत्र

1. पद्मपुराण में तरुपुत्र

अपुत्रस्यच पुत्रत्वं पादपा इह कुर्वते।
यच्छन्ति रोपकेभ्यस्ते च तीर्थे तर्पणादिकम्।

तीर्थे पुत्रसहस्राणामेक मेव करिष्यति।

पुत्र सहस्राणां कर्त्तव्यमिति शेषः।

–विधान पारिजात खण्ड 4 अ. 206 से उद्धृत

पुत्र के रूप में वृक्ष लगाने वाले पुत्र हीन को वृक्ष सुख प्रदान करते हैं। वृक्षों को तर्पण करने से तीर्थ में तर्पण हो जाता है। हजारों पुत्रों में तीर्थ में एक ही पुत्र तर्पण करेगा और वृक्ष हजारों पुत्रों के समान है।

वरं भूमिरुहाः पञ्च न तु कोष्ठरुहा दश।
पत्रैः पुष्पैः फलैर्म्मूलैः पणिनः प्रीणयन्त्यमी।।

–विधान पारिजात खण्ड 4 अ. 49 से उद्धृत

पाँच वृक्षों का भी रोपण करना दस पुत्र के समान होता है। क्योंकि एक वृक्ष अपने पत्तों से पुष्पों से फलों से जड़ मूल से जीवों को जीवनदान करते हैं।

अथैतेषांतुवृक्षाणां रोपणे च गुणाञ्शृणु।
अतीतानागतौ चोभौ पितृवंशौ महाऋषे।।

तारयेद्वृक्षरोपी च तस्माद्वृक्षांस्तु रोपयेत्।
पुत्रपौत्रा भवंत्येते पादपानात्रसंशय।।

परलोकं गतः सोपि लोकानाप्नोतिचाक्षयान्।
पुष्पैःसुरगणान्सर्वान्पत्रैश्चापि तथा पितॄन्।।

उन वृक्षों के रोपण करने का गुण सुनो। अतीत एवं (वर्तमान भविष्य) अनागत दोनों वृक्ष रोपण करने वाले वंशों का उद्धार किया अतः वृक्षों को लगाना चाहिए। ये वृक्ष पुत्र पौत्र होते हैं इसमें संशय नहीं है। परलोक गये अक्षय लोक (बैकुण्ठ) को प्राप्त करते हैं।

छायया चातिथीन्सर्वान्पूजयन्तिमहीरूहाः।
किन्नरोरगरक्षांसि देवगंधर्वमानवाः।।

तथाऋषिगणाश्चैव संश्रयंतिमहीरूहान्।
पुष्पिताःफलवंतश्चतर्पयन्तीह मानवान्।।

इहलोके परे चैव पुत्रास्ते धर्मतःस्मृताः।

–पद्मपुराण–वृक्षप्रपासरोवरतपोध्ययन धर्मव्याख्यान माहात्म्य नामक अध्याय

वृक्ष पुष्पों से देवताओं को पत्तों से पितृगण का और छाया द्वारा अतिथिगणों की पूजा करते हैं। वृक्ष में किन्नर, नाग, देव, गंर्ध, मानव, राक्षस तथा ऋषिगण निवास करते हैं। ये पुष्पों और फलों से लदकर मनुष्य को अर्पित करते हैं। इसलोक में और परलोक में ये धर्मपुत्र कहे जाते है।

2. नन्दिपुराण में तरुपुत्र

तरुपुत्रन्तु यः कुर्य्याद्विधिवद्वह्नि सन्निधौ।
स महापातकैर्युक्तं समुद्धृत्य कुलत्रयम्।।
नरकेभ्यो नरो याति प्रजापति पदं शुभम्।

–विधान पारिजात खण्ड 4 अ. 206 से उद्धृत

जो व्यक्ति विधिपूर्वक अग्नि का स्थापन करके पुत्र के रूप में वृक्ष का रोपण और उत्सर्ग करता है वह सम्पूर्ण महापातकों से अधोगति में पड़े हुए अपने तीन पीढ़ी का उद्धार करता है। वह व्यक्ति अपने पितरों के साथ नरक से मुक्त होकर प्रजापति के लोक में अर्थात् पितृलोक में जाता है।

3. मत्स्य पुराण में तरुपुत्र

दशकूपसमो वापी दशवापीसमोह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमः द्रुमः।।

–विधान पारिजात खण्ड 4 अ. 49 से उद्धृत

एक सरोवर के निर्माण में जो पुण्य होता है वह दस कुओं के निर्माण के समान है और दस सरोवर के निर्माण में जो पुण्य होता है वह एक ह्रद (विशाल सरोवर) के निर्माण में है। दस विशाल सरोवरों को एक पुत्र के समान माना गया है और एक वृक्ष का रोपण दस पुत्र के समान कहा गया है।

4. विष्णुस्मृति में तरुपुत्र

वृक्षारोपयितुर्वृक्षाः परलोके पुत्रा भवन्ति।
वृक्षप्रदस्य वृक्षः प्रसूनैर्देवान् प्रीणयन्ति।।

फलैश्चातिथीन्, छाययाभ्यागतान्।
दैवे वर्षे उदकेन पितॄन्।।

–विष्णुस्मृति : श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय स. 34 से उद्धृत

जो वृक्षारोपण करता है उसके द्वारा रोपित वृक्ष परलोक में पुत्र होते हैं। वृक्ष प्रदान करने वाला उस वृक्ष के फूलों से देवताओं को प्रसन्न करता है, मेघ के बरसने पर छाता के द्वारा अध्यागतों को तथा जल से पितरों को प्रसन्न करता है।

5. ब्रह्मवैवर्त पुराण में तरुपुत्र

"त्वं वृक्ष पुत्रपरिकल्पनया धृतोऽसि।
कार्य्यं सदैव भक्त्या मम पुत्र कार्य्यं।।"

'हे वृक्ष ! मैंने तुम्हें पुत्र की कल्पना से धारण किया है। मेरे पुत्र के कार्य को सदा भक्ति पूर्वक करना।'

पुत्रैर्विना शुभफलं न भवेन्नराणां
दुष्पुत्रकैरपि तथोभयलोकनाशः
एतद्विचार्य्य सुधिया परिपाल्य वृक्षान्

–वृक्ष उद्यापन विधि के अन्तर्गत–हेमाद्रि में दानखण्ड अ. 13 से उद्धृत।

पुत्र के बिना मानव का शुभ नहीं होता। दुष्पुत्र से भी इस लोक एवं परलोक का नाश होता हैं इसी को विचार कर विद्वानों ने वृक्षों का पालन किया।

वृक्ष के प्रति मंगल कामना

मा त्वाऽशनिर्म्मा परशुर्मा वातो मा राजप्रेषितो दण्डः।।
अङ्कुरास्ते प्ररोहन्तु निवाते त्वाऽभिवर्षतु अग्निष्टे मूलम्माहि
ठ् सीत्स्वस्ति तेऽस्तु वनस्पते स्वस्ति मेऽस्तु वनस्पत इति।

– पारस्करगृहसूत्रम्–तृतीयकाण्डस्य पञ्चदशी कण्डिका–श्लोक–21

हे वनस्पते ! तुम्हें न बिजली, न कुल्हाड़ी, न आंधी और न ही राजा द्वारा प्रेषित दण्ड (नष्ट करे)। तुम्हारे अंकुर बढ़ें, वायु से रक्षा करके तुम्हारे ऊपर वर्षा हो। अग्नि तुम्हारी जड़ को हानि न पहुंचाये। हे वनस्पते ! आपका कल्याण हो। आपका कल्याण हो।

6. अग्निपुराण में तरुपुत्र

तस्मात् सुबहवो वृक्षा रोप्याः श्रेयोऽभिवाञ्छता।
पुत्रवत् परिपाल्याश्च ते पुत्रा धर्म्मतः स्मृताः।।

किं धर्म्मविमुखैर्मर्त्यैः केवलं स्वार्थहेतुभिः।
तरुपुत्राः वराः ये तु परार्थैकानुवृत्तयः।।

उन्नति की इच्छा रखने वाले अनेक वृक्षों को लगायें। उनका पुत्र के समान पालन पोषण करें वे धर्म के द्वारा पुत्र कहे गये हैं। धर्म से विमुख वे इस मर्त्यलोक में केवल स्वार्थ के वशीभूत हैं। वृक्ष को पुत्र रूप में जिन्होंने वरण किया वे दूसरों के लिए अनुकरणीय है।

पत्रपुष्पफलच्छायामूलवल्कलदारुभिः ।
परेषामुपकुर्व्वन्ति तारयन्ति पितामहान्।।

छेत्तारमपि संप्राप्तं छायापुष्पफलादिभिः।
पूजयन्त्येव तरवो मुनिवद्देषवर्जिताः।।

वृक्ष पत्ते, पुष्प, फल, पहनने हेतु वस्त्र और लकड़ी के द्वारा दूसरों का उपकार व पितामहों का उद्धार करते हैं। वृक्ष काटने वाले के उपस्थित होने पर भी उसे मुनि के समान द्वेष रहित होकर छाया, पुष्प और फलादि से उनकी पूजा की करते हैं।

पितरं नोपहिंसन्ति द्रुमा द्रविणलोभतः।
तारयन्ति च मे सम्यक् सर्व्वस्यातिथ्यदायकाः।।

तस्मात्ते पुत्रवद् मान्या विधिवद्विजपुङ्गव।

(अग्निपुराण के तड़ागवृक्ष प्रशंसा नामक अध्याय से संदर्भ कर – शब्द कल्पद्रुम में 'वृक्ष' शीर्षक में उल्लेखित)।

पितरों का नाश (अपकार) वृक्ष नहीं करते। सभी को आतिथ्य प्रदान करने वाले हमें भली भाँति उद्धार करते हैं। अतः हे द्विजश्रेष्ठ वे विधिवत् पुत्र के समान हैं।

7. महाभारत में तरुपुत्र

अतीतानागतौ चोभौ पितृवंशौ च भारत।
तारयेद्वृक्षरोपी च तस्मद्वृक्षांश्च रोपयेत्।।

अतीत और वर्तमान दोनों पितृवंशों को वृक्ष रोपने वाले उद्धार करते हैं अतः वृक्ष का रोपण करना चाहिए।

पुष्पिता फलवन्तश्च तर्पयन्तीह मानवान्।
वृक्षदं पुत्रवद्वृक्षास्तारयन्ति परत्र च।।

पुष्पित और फलवान् होकर मानवों को फल प्रदान करते हैं। वृक्ष की पुत्रवत् रक्षा करने पर इस लोक एवं परलोक में वृक्ष उद्धार करते हैं।

तस्मान्तड़ागे रोप्या वै वृक्षाः श्रेयोर्थिभिःसदा।
पुत्रवत्परिपाल्याश्च पुत्रास्ते धर्म्मतः शुभाः।।

हेमाद्रि दानखण्ड अ. 13 से उद्धृत

इसीलिए यश तथा धन चाहने वाले सदा बावड़ी (जलाशय) में वृक्ष का रोपण करें, उनका पुत्रवत् परिपालन करें, वे पुत्र (वृक्ष) धर्मतः शुभ हैं।

पुत्री और तरुपुत्री

"शकुन्तला ! मैंने तेरे के लिए जैसा पति चाहा था, तूने अपने पुण्य के प्रभाव से वैसा ही पति पा लिया और इस वनज्योत्सना (आश्रम की एक चमेली पुष्प की पौध, तरुपुत्री का नाम) को भी आम का ठीक सहारा मिल गया है। अब मैं तुम दोनों (विवाह) की चिन्ता से मुक्त हो गया हूँ।"

– अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कण्व ऋषि

8. वाराहपुराण में तरुपुत्र

यथा सुपुत्रः कुलमुद्धरेद्धि
यथातिकृत्स्नान्नियमप्रयत्नात्।

तथात्र वृक्षाः फलपुष्पभूताः
स्वं स्वामिनं नरकादुद्धरन्ति।। 37।।

जैसे सुपुत्र कुल का उद्धार करता है उसी प्रकार कठिन नियम और प्रयत्न से लगाये गये वृक्ष अपने स्वामी का उद्धार करते हैं।

सांवत्सरं पितुर्मातुरुपकारं फलैः कृतम्।
एवं पुत्राः समारोप्या एवं तत्वविदो विदुः।। 41।।

वाराह पुराण अध्याय–170

वृक्ष प्रति वर्ष (अपने) फलों द्वारा माता पिता (स्वरूप अपने लगाने वाले) का उपकार करते हैं। तत्वविदों का कहना है कि मनुष्य द्वारा लगाये गये वृक्ष उसके पुत्र तुल्य होते है।

"वन देवताओं से भरे हुए तपोवन के वृक्षों ! जो शकुन्तला पहले तुम्हे पिलाये बिना स्वयं जल नहीं पीती थी, जो आभूषण पहनने का प्रेम होने पर भी, तुम्हारे स्नेह के कारण तुम्हारे कोमल पत्तों को हाथ नहीं लगाती थी, जो तुम्हारी नई कलियों को देखकर फूले नहीं समाती थी, वही शकुन्तला आज अपने पति के घर जा रही है। तुम सब इसे प्रेम से विदा कर दो।"

– अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कण्व ऋषि

तरुपुत्र धारण विधि

तरुपुत्र धारण करने की विस्तृत विधि विधान पारिजात खण्ड 4 अ. 49 में स्कन्दपुराण ग्रन्थ सन्दर्भ से वर्णित है। प्रस्तुत है मूल श्लोक व उसका अनुवाद। इस वर्णन को पढ़ कर सामान्य पाठक को यह एक अतिश्योक्तिभरी अतिरंजित विधि प्रतीत हो सकती है किन्तु ऐसा सोचने के पहले कल्पना करें कि यदि आप ही किसी को हृदय से अपना पुत्र स्वीकार करें तो उसका किस–किस तरह से अलंकरण करेंगें।

पार्वती जी अपने पति से बोलीं कि–

भगवन् केन विधिना विधीनां सार सागरः।
पुत्रप्रतिकृतिर्वृक्षः क्रियते चन्द्रभूषण।।

हे त्रिलोकेश! चन्द्रभूषण विधान को जानने वाले कृपया यह बतायें कि किस विधि से वृक्ष को पुत्र की प्रतिकृति बनाया जाता है। अर्थात् वृक्ष को पुत्र के रूप में कैसे स्वीकार किया जाता है।

सलीलमिति सा सर्व्वं पृच्छन्ती विधिमुत्तमम्।
महादेवो महादेवीमिदं वचनमब्रवीत्।।

इस प्रकार उत्तम विधि की जानकारी हेतु पूछते हुए पार्वती से महादेव जी महादेवी से इस प्रकार बोले–

देवि ! नागेन्द्रनासोरु नागेन्द्रगतिगामिनि।
शृणुष्व येन विधिना गृह्यतेऽवनिजः सुतः।।

नागेन्द्र गतिगामिनी ! हे गजगामिनी ! पर्वत से उत्पन्न होने वाली ! सुन्दर नासिका वाली! वृक्ष को पुत्र के रूप में स्वीकार करने की विधि सुनो।

वृक्ष को पुत्र के रूप में स्वीकार करने का विधान –

स्वपुत्रार्थं भूमिरुहं ग्रहीष्यामीति पार्व्वति! ।
सोपवासा भवेन्नारीशुचिवस्त्रा शुचिव्रता।।

ततश्चैव सहस्रांशावस्तशृङ्गं गते रवौ।
उदिते विमले चापि तथेन्दाबिन्दुसन्निभे।।

विप्रानामन्त्रयेद्रात्रौ पावनान् वेदवेदिनः।
विप्रान् निमन्त्रयित्वा तु शुचिवस्त्रा शुचिव्रता।।

शयीत सनमस्कारा सदर्भां भूमिमाश्रिता।
गमयित्वाथ रात्रिं सा सवितर्य्युदितेऽपि च।।

भक्ष्यभोज्ये समादाय व्रजेद् यत्र भवेत्तरुः।
ततस्तं स्नापयित्वा तु सातपत्रं सभूषणम्।।

हे पार्वती! पतिव्रता स्त्री पहले यह संकल्प करे कि मैं वृक्ष को अपने पुत्र के रूप में बनाऊंगी। तत्पश्चात् शुभ मुहूर्त में उपवासपूर्वक पवित्र व्रत धारण करती हुयी स्वच्छ एवं पवित्र वस्त्र धारण करके सूर्य के अस्त हो जाने पर सायंकाल आकाश में सुन्दर बिन्दु के समान निर्मल चन्द्रमा के उदय होने पर वेदज्ञ कर्मनिष्ठ ब्राह्मणों को आने का निमन्त्रण दे। पवित्र व्रत धारण करने वाली और पवित्र वस्त्र पहने हुए ब्राह्मणों के आदेशानुसार ब्राह्मणों को प्रणाम करके उनका सत्कार करे, भूमि पर कुश बिछाकर शयन करें। कुश के आसन पर रात्रि व्यतीत होने पर सूर्योदय होने पर वृक्ष के पास सुन्दर भोजन करने योग्य भक्ष्य अन्नादि को लेकर जाय। वहां पर वृक्ष के पास छाता लगाकर वृक्ष को जल से पंचामृत से स्नान कराकर गन्धोदक आदि से स्नान कराकर वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित करें।

तं तरुं तरुणीकृत्य ततश्छायानुमापि यः।
यथोपपन्नानासन्नान् भोजयित्वा द्विजांस्ततः।।

पुण्याहं कारयित्वा तु ऋृत्विजाऽथवात्मना।
तृप्तानां ब्राह्मणानाञ्च तत्वेनाकूतमात्मनः।।

निवेद्य कृतमुद्दिश्य सद्भावेन परेण हि।
अपुत्रो भगवन्तोऽहं पुत्र प्रकृतिकं तरुम्।।

ग्रहिष्यामि ममानुज्ञां कर्त्तुमर्हत सत्तमाः।
ततस्तैरभ्यनुज्ञातं तन्तरुं तरुणाकृतिम्।।

भूमिदेविसमक्षं वै गृह्णीयात्तनयं प्रिये।
भूमिदेवसमक्षन्तु विधेयं ब्राह्मणाग्रतः।।

अनेनविधिना यस्तु गृहीततरुपुत्रकः।
पितृणां निरयस्थानां मधुधाराः स वर्षति।।

बालक की तरह से उस वृक्ष की भी रक्षा करें, सींचे। उसमें पौष्टिक तत्व डालें। जब वे वृक्ष बड़े हो जायें, सर्वत्र छाया फैलने लगे उस समय उसका उत्सर्ग करें। विद्वान कर्मनिष्ठ परिचित निकटस्थ योग्य ब्राह्मणों को निमन्त्रित करें। आचार्य ब्रह्मा ऋत्विज का वरण करें। उनके द्वारा पुण्याहवाचन करावें। ब्राह्मणों को प्रसन्न करके उनको अपना संकल्प निवेदन करें। ***ब्राह्मणों से प्रार्थना करें "आदेशानुसार इस वृक्ष को जो बड़ा हो गया है को हम पुत्र के रूप में स्वीकार करना चाहते हैं हम पुत्रहीन हैं"****। हे पार्वती! इस प्रकार ब्राह्मणों के समक्ष पुत्र के रूप में स्वीकार करें। इस विधि से जो व्यक्ति विधिपूर्वक ब्राह्मणों की अनुज्ञा से वृक्ष को पुत्र के रूप में स्वीकार कर लेता है उसके नरक में स्थित पितरों के ऊपर अमृत की वर्षा होती है अर्थात् पितर लोग तृप्त होकर उत्तम लोक को चले जाते हैं।*

गृहीतो विधिना येन शुभे भूमिरुहात्मजः।
शुभः सुखाय भवति विपरीते तु दुःखदः।।

पुत्रेभ्यः शतसंख्येभ्यः पीनश्रोणिपयोधरे।
एकोभूमिरुहः श्रेष्ठः पुत्रत्वे कल्पितः सुतः।।

इत्येवं यन्मया शिष्टमिष्टदुष्ट भवारिणा ।
यथा भूमिरुहः पुत्रो विशिष्टः कोष्ठजैः सुतैः।।

ततः शोकापहं देवि तम शोकविभाविना।

इस प्रकार विधि पूर्वक वृक्ष को पुत्र के रूप में स्वीकार करने से सुख की प्राप्ति होती है, अन्यथा उनका जीवन दुखी होता है। हे सुन्दरि! सौ पुत्रों से श्रेष्ठ एक वृक्ष स्वीकार किया हुआ होता है। इस प्रकार मैने दुख सागर संसार से पार पाने के लिए विधान बताया। कोष्ठज पुत्रों से श्रेष्ठ स्वीकार किया हुआ वृक्ष होता है। हे देवि यह तरुपुत्र शोककारी अन्धकार को दूर करने वाला होता है।

अलञ्चकार सन्तुष्ट्या ह्यलङ्कारैः पृथग्विधैः।।

आतपत्रञ्च तस्याग्रे मुक्तादाम–विभूषितम्।
उच्छ्रयामास गिरिजा मयूराम्बुरुहैः सह।।

नानावर्णैर्भूषयित्वा चन्दनेन सुगन्धिना।
अमूल्यान्प्रददौ देवि ! अलङ्कारानितस्ततः।।

जान्बुनदमयैश्चापि पट्टैरत्नविराजितः।
सर्व्वं तं भूषयामास तमशोकरुहं प्रियम्।।

तस्य शाखा प्रशाखासु मुक्तादामानि पार्व्वति।

आवबन्ध सवैभाति यथाऋक्षैः क्षपाकरः।

तथा वासोयुगेनापि तमशोकं सुहारिणी।
वासयामास लोकानां जननी पुत्रलालसा।।

ततः तमरुणाचारु गुग्गुलं घृतमेव च।
समवायुयुतं धूपं चारयन् धूपचर्च्चितः।।

ततः शङ्खनिनादेन देवतूर्य्यरवेण वा।
नन्दिना च समानीता ब्राह्मणाः ब्रह्मणः समाः।।

वाचयामास पुण्याहं दत्वा गाः स्वर्णमेव च।
ततः पुण्याहघोषेण आशीर्वादश्च चोभयोः।।

अनुमान्य पतिं देवि ! ऋषींश्च प्रीणयन्मुदा।

पार्वती जी द्वारा तरुपुत्र का धारण–*उन वृक्षों को प्रसन्न होकर विविध अलंकारों से पार्वती जी ने अलंकृत किया। मुक्तामाला से विभूषित किया छत्र स्थापित किया मयूर चिन्हित सुन्दर कमलों से युक्त पताका फहराया। अनेक प्रकार के सुन्दर आभूषणों से अविभूषित किया सुगन्धित चन्दनों से अनुलेप किया, मूल्यवान अलंकारों से चारों तरफ से वृक्षों को अलंकृत किया। सुवर्णमय रत्न विभूषित वस्त्र से सुशोभित करके उस अशोक के वृक्ष को पार्वती जी ने सब तरफ से विभूषित किया। पार्वती जी*

ने वृक्ष के डाली–डाली में मोतियों की माला लगा दिया। उन मुक्ता मालाओं से वृक्ष ऐसे सुशोभित होने लगे जैसे नक्षत्रों से चन्द्रमा सुशोभित होता है। पुत्र की कामना वाली पार्वती ने उस अशोक वृक्ष को दो वस्त्रों से अलंकृत किया उसके पश्चात् सुन्दर अरुण वर्ण के घृत मिश्रित गुग्गुल से धूप बनाकर सुगन्धित धूप से पूजा किया और शंखध्वनि किया। देवताओं ने दुन्दुभि बजायी नन्दिकेश्वर वृषभ पूजा कराने के लिए ब्रह्मा के समान वेदज्ञ ब्राह्मणों को बुलवाकर पूजन कराया, पुण्याहवाचन कराया। पार्वतीजी ने उन ब्राह्मणों को वस्त्र सुवर्ण आभूषण और गायों का दान किया। वेदज्ञ ब्राह्मणों के आशीर्वाद से पुण्याहवाचन की ध्वनि से ऋषियों को प्रसन्न करती हुई प्रसन्न पार्वती ने अपने पति को अनुकूल बनाया।

वृक्ष पर आश्रित आत्मायें

भारतीय मान्यता में किसी वृक्ष पर कितने प्रकार की आत्मायें आश्रय लेती हैं इसका अनुमान वृक्ष काटने से एक दिन पूर्व की जाने वाली पूजा की विधि से स्पष्ट हो जाती है–

"वृक्ष काटने से एक दिन पूर्व खीर, लड्डू, भात, दही, मांस, उल्लोपिका आदि भक्ष्य वस्तु, मद्य, पुष्प और सुगन्धित द्रव्यों से वृक्ष की पूजा करें। रात में देवता, पितर, पिशाच, राक्षस, नाग, सुरगण, गणेश आदि (भूत, प्रेत, सिद्ध, विद्याधर और गन्धर्व) की पूजा करके वृक्ष को स्पर्श करे और निम्न मन्त्र पढ़े –

'हे वृक्ष ! अमुक कार्य के लिए कल्पित किये गये आप को नमस्कार करता हूँ। विधिपूर्वक इस पूजा को ग्रहण करें तथा इस वृक्ष पर जो प्राणी गण निवास करते हैं वे सब विधिपूर्वक इस पूजा को ग्रहण करके कहीं अन्यत्र निवास स्थान कल्पित करें, आज वे सब क्षमा करें, उनको नमस्कार करता हूँ।"

वृहत्संहिता अ. 59 –श्लोक 8–12

तरुपुत्र के प्रति संवेदनशीलता

प्राचीन काल में वृक्ष को पुत्र रूप में धारण करने वाले लोग इस वृक्ष की सेवा और सुरक्षा के प्रति कैसा दृष्टिकोण रखते थे। यह कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्य द्वितीय सर्ग में सिंह द्वारा राजा दिलीप की वार्ता से स्पष्ट है। सिंह राजा दिलीप से कहता है –

अमुं पुरः पश्यसि देवदारूं
पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन।
यो हेमकुम्भस्तननिःसृतानां
स्कन्दस्य मातुः पयसां रसज्ञः।।

हे राजन् ! तुम सामने खड़े देवदारु का पेड़ देख रहे हो। शिवजी ने इसे अपना पुत्र माना है। माता पार्वती जी ने अपने स्तनों के दूध से सिंचन कर इसे इतना बड़ा किया है।

कण्डूयमानेन कटं
कदाचिद्वन्यद्विपेनोन्मथिता त्वगस्य।
अथैदमद्रेस्तनया शुशोच
सेनान्यमालीढमिवासुरास्त्रैः।।

(तुम जानते नहीं कि पार्वती इसे कितना प्यार करती हैं) *एक बार किसी जंगली हाथी ने अपनी कनपटी को रगड़ते हुए इस देवदारु की छाल को थोड़ा सा छील दिया तो पार्वतीजी ने वैसा शोक किया था जैसा कि उन्होंने अपने पुत्र कार्तिकेय के असुरास्त्रों से घायल होने पर किया था।*

तदाप्रभृत्येन वनद्विपानां
त्रासार्थमस्मिन्नहमद्रिकुक्षौ।
व्यापारितः शूलभृता विधाय
सिंहत्वमङ्कागतसत्ववृत्ति।।

तब से शंकर ने जंगली हाथियों को डराने के लिए सिंह की आकृति देकर मुझे यहां पहाड़ की ढाल की इस गुफा पर नियुक्त कर रखा है और आज्ञा दे दी है कि यह जो भी जीव आये उसे मारकर खा लिया करो।

आज भी.....

- सितम्बर, 2001 अपने एक दैनिक श्रमिक के दाह संस्कार में भाग लेने के लिए श्री मन मोहन मिश्र वन क्षेत्राधिकारी – गोरखपुर में, फरेन्दा – पकड़ी मार्ग पर स्थित रोहिन नदी के श्मसान स्थल पर गये थे, थोड़ी देर में एक महात्मा की फूट–फूट कर विलाप करने की आवाज सुनाई पड़ी, पूछने पर पता चला कि शव यात्रा में साथ गये लोगों में से किसी ने महात्मा जी द्वारा आश्रम के पास पुत्रवत् पाले गये वृक्षों में से एक वृक्ष की एक बांह (शाख) काट दी है। जिज्ञासा करने पर पता चला कि महात्मा जी ने आश्रम परिसर व इसके मार्ग पर स्वयं श्रम कर रोपण किया है, इन वृक्षों को अपनी सन्तान की तरह पालते और रक्षा करते हैं, इन वृक्षों को कोई क्षति हो वे बहुत दुखी हो जाते हैं।
- श्री ललित किशोर त्रिपाठी एक सितम्बर 1980 को अपने आवास के निकट पार्क में अपने एक साल के बच्चे से स्पर्श कराकर एक पीपल रोपित किया। वृक्ष को नियमित जल देते समय वे हर बार इसे गले लगाते थे। 15 वर्ष की आयु आते आते यह रोपित पुत्र इतना बड़ा हो गया कि पिता की बांहों में नहीं आ पाता था। आज इनका एक पुत्र राहुल अमेरिका में लोकसेवी अनुसन्धान में निरत है तो दूसरा राजाजीपुरम (लखनऊ) के 'इ' ब्लाक में विशाल रूप धारण कर हजारों निरीह प्राणियों को प्रतिदिन भोजन–छाया, पड़ोसियों को शीतल शुद्ध वायु व नगर को पवित्र पर्यावरण देने का कार्य कर रहा है। लोगों ने अब इस वृक्ष के पास भव्य मंदिर का निर्माण कर दिया है। श्री त्रिपाठी जो इस समय जालौन में सहायक वन संरक्षक के पद पर कार्यरत हैं अपने दोनों पुत्रों के उपलब्धियों से सन्तुष्ट हैं।
- भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री दिनेश सिंह ने जनवरी, 1996 में अपने गोमतीनगर, लखनऊ स्थित आवास के सामने की सड़क–पटरी पर पर्यावरणीय महत्व की 280 पौध रोपित कर सन्तानवत पाला। कुछ ही वर्षों मे अच्छी सेवा और देख–रेख

के कारण ये रोपित सन्ताने बहुत बड़ी हो गयी, इनमें चिड़ियाँ वास करने लगीं, आस पास के लोग इस रोपण के पीपल व बरगद को पूजने लगे। यह रोपण लोगों के सहज आकर्षण का केन्द्र वन गया था। दुर्भाग्यवश अक्टूबर, 2003 में ये सब वृक्ष श्री दिनेश सिंह जी की अनुपस्थिति में कट गये, स्मृति के रूप में मात्र दो त्रिशूल आकृति धारी पीपल वृक्ष बचे हैं। श्री दिनेश सिंह जी इन तरुण वृक्षों की हत्या से बहुत दुःखी है, यह उनके सम्पर्क में आने वाले लोग अनुभव करते हैं।

- सिमैप से सेवानिवृत्त एक वैज्ञानिक के आंगन में एक नीबू का पेड़ था, किसी निर्माण कार्य के लिए इस पेड़ को काटना पड़ गया, जिस दिन यह पेड़ कटा, उस दिन इस पेड़ के लिए पूरा घर रोया और उस दिन रात में किसी ने खना नहीं खाया।

- राजस्थान व हरियाणा में फैल विश्नोई समाज के लोगों के घर के आस पास व खेत में जन्ड (शमी, छ्योंकर) के वृक्ष बहुतायत से पूर्ण अंग सहित मिलते हैं। ये लोग इस वृक्ष को परिवार के सदस्य के रूप में देखते है इनसे उसी तरह का रिश्ता रखा जाता है जैसे घर के सदस्यों के साथ। बड़े वृक्षों को बच्चे बाबा, पिता, बड़े भाई के रूप में देखते है तो छोटे पौधों को लोग बेटे के रूप में देखते है। इन पारिवारिक सदस्यों को कटने से बचाने के लिए विश्नोई समाज के सदस्यों ने अपने को कटवा डाला था जो तरू पुत्र रक्षा की दिशा का एक ऐतिहासिक सत्य है।

- वृन्दावन के महात्मा की एक घटना कहीं पढ़ी थी। महात्मा जी के आश्रम में एक पेड़ था जिसे व बहुत आत्मीयता से देख भाल करते थे। एक बार आपनी कुटी में बैठे साधना कर रहे थे, अचानक ऊँगली झिटक कर कराह पड़े जैसे किसी ने उनकी ऊँगली तोड़ दी हो। उनके शिष्य सहयोगी पेड़ की ओर दौड़े, देखा कोई नया व्यक्ति वृक्ष की एक पतली शाख को तोड़ रहा था। जब भी कोई व्यक्ति उस वृक्ष को कोई कष्ट पहुँचाता था तो महात्मा जी चाहे जहां रहें उन्हें उसी तरह का कष्ट होने लगता था।

देख खुला है द्वार पुजारी !

प्रस्तुत पुस्तिका में दिये गये सन्दर्भ प्राचीन भारतीय समाज के हैं। तब वृक्ष व वनों की बहुतायत थी या यों कहें कि वन का बाहुल्य लोगों के लिए समस्यायें उत्पन्न करता था। तब भी हमारे ऋषिगणों ने वृक्ष की महत्ता को स्वीकार किया और वह भी इस रूप में कि उन्हें अपनी सन्तान से अधिक महत्त्व देने का शिक्षण दिया। आज के जंगल और वृक्ष प्राचीनकाल की तुलना में कुछ भी नहीं हैं। आज के सन्दर्भ में किसी ऋषि का यही निर्धारण होगा कि अब वृक्ष को सन्तान ही नहीं साक्षात ईश्वर की प्रतिमा के रूप में देखा जाय, वृक्षों को उपभोक्ता वस्तु के रूप में देखने की प्रवृत्ति पर कुठाराघात किया जाय और ***वृक्ष सेवा = सृष्टि सेवा, वृक्ष रक्षा = सृष्टि रक्षा व वृक्ष पूजा = सृष्टि पूजा*** के सिद्धान्तों को लोगों के जीवन में व्याप्त कराया जाय।

वे भाग्यशाली हैं जिन्होंने पेड़–पौधों की सेवा व रक्षा करने के सौभाग्य का वरण कर लिया है। पेड़–पौधों की रक्षा सेवा व अभिवर्धन में किसी भी प्रकार का योगदान देना आज का सबसे बड़ा धर्म है। आपको अपने कृत्यों के लिये किसी को सफाई देने की आवश्यकता नहीं है, ईश्वर आपके अन्दर खुद बैठा हुआ है, आपके हर कार्य को देख रहा है।

पूजा के लिए भगवान के मन्दिर का द्वार खुला है भगवान आपका इन्तजार कर रहा है आगे बढ़िये ! वृक्ष सेवा द्वारा ईश्वर की पूजा कर अपने इस जीवन को धन्य बना लीजिए।

